कांगड़ी भाषा का संरक्षण: एक आवश्यक प्रयास

शीतल कुमारी
(शोधार्थी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्विद्यालय धर्मशाला
मो. 9015322438 / 9805696385
डॉ.अशोक कुमार
शोध-निर्देशक
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्विद्यालय धर्मशाला

सार: हिमाचल प्रदेश की प्रमुख भाषाओं में से एक है कांगड़ी भाषा,जो कांगड़ा जिले में व्यापक रूप से बोली जाती है। कांगड़ी भाषा हिमाचल प्रदेश की संस्कृति और परम्पराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है इसमें कई ऐसे पुराने शब्द और मुहावरे हैं जो हिमाचल की संस्कृति को दर्शाते हैं। कांगड़ी भाषा के माध्यम से कांगड़ा जिले की विशिष्ट पहचान और संस्कृति को समझा जा सकता है। कांगड़ी भाषा के संरक्षण के लिए अनेक प्रयास करने होंगे ताकि यह भाषा आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संरक्षित रह सके।

बीज शब्द: गौरवपूर्ण, अमूल्य, मानवीय, आकर्षित, सांस्कृतिक, चकाचौंध, मानसिकता, मातृभाषा, मूल्यों।

भूमिका : पहाड़ी हिन्दी के विकास की बात की जाए तो खस अपभ्रंश से हुई। खस अपभ्रंश मुख्यतया तीन भागों में बंटी है। पूर्वी पहाड़ी, केन्द्रीय या मध्यवर्ती पहाड़ी और पश्चिमी पहाड़ी। हिमाचल प्रदेश की जितनी भी बोलियां आती हैं पश्चिमी पहाड़ी के अन्तर्गत आती हैं। जॉर्ज ग्रियर्सन ने लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में पश्चिमी पहाड़ी के अन्तर्गत 62 बोलियों का उल्लेख किया था। इसी आधार पर हिमाचल प्रदेश की बोलियां मंडियाली, कांगड़ी, चम्बियाली, सुकेती इत्यादि बोलियां हैं जो हिन्दी की मुख्य बोलियां हैं। हिमाचली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए हिमाचल के साहित्यकार, कवि व लेखक पहाड़ी बोली में ज्यादा से ज्यादा लेखन कार्य कर विशेष योगदान दे सकते हैं। हिमाचली भाषा का इतिहास काफी गौरवपूर्ण रहा है। साथ ही हमारी गौरवपूर्ण सभ्यता, संस्कृति और साहित्य को वर्तमान संदर्भ में कलमबद्ध करने की नितांत आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ी अमूल्य धरोहर से वंचित न रह जाए...।

किसी भी राष्ट्र या देश की उन्नति, सभ्यता, संस्कृति और उसके मानवीय विकास को परखने की कसौटी उसकी बोली है। इसके अलावा बोली का महत्त्व इस बात पर निर्भर करता है कि सामाजिक व्यवहार, शिक्षा और साहित्य में उसका क्या महत्त्व है। प्रत्येक भाषा का विकास बोलियों से ही होता है। यहां तक कि पशु-पक्षी अपनी भाव-अभिव्यक्तियों के लिए जिन ध्वनियों का प्रयोग करते हैं, उन्हें भी बोली ही कहते हैं। पुरानी भाषा या बोलियों के नमूने हमें अनेक शिलालेख, ताम्रपत्र, भोजपत्र तथा स्तंभ आदि पर प्राचीनकालीन लिपियों के रूप में मिलते हैं। इसलिए शायद हमारी पहाड़ी भाषाओं का उद्गम वैदिक संस्कृति से ही माना जाता है। हिमाचल के अधिकतर क्षेत्रों में स्थानीय बोलियां प्रचलित हैं। इनमें महासवी, कुल्लवी, कांगड़ी, मंडियाली, किन्नौरी बोलियां प्रमुख हैं।

वर्तमान में हिमाचल में करीब 33 क्षेत्रीय बोलियां बोली जाती हैं। जिनमें से कांगड़ी बोली भी अपना विशेष स्थान रखती है ।ये बोलियां लोक साहित्य, दलांगी साहित्य, लोक गीत, लोक गाथाओं और नैतिक मूल्यों का बेशकीमती खजाना अपने आप में संजोए हुए हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारे हिमाचल में बारह कोस पर बोली बदल जाती है, लेकिन जो हमारे रीति-रिवाज, लोक परंपराएं और लोक संस्कृति है, वह करीब-करीब एक समान ही है। कांगड़ी उत्तर भारत में मुख्य रुप से हिमाचल प्रदेश के कांगड़ी लोगों की भाषा है। मई 2021 से कांगड़ी बोली वर्तमान में यू डी (यूनिवर्सल डिपेंडेंसीज) के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय पटल पर आ गई है इस पटल पर अब तक 10 भाषाएं ही शामिल है जिनमें से कांगड़ी भी एक है। कांगड़ी बोली मुख्यत: कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना जिलों तथा चम्बा, मण्डी, पठानकोट, होशियारपुर (पंजाब) तथा उधमपुर (जम्मू और कश्मीर) आदि के कुछ भागों में भी बोली जाती है। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के कुछ भागों में भी सीमित संख्या में कांगड़ी बोलने वाले व्यक्ति हैं। 2021 की जनगणना के अनुसार 1.17 मिलियन से अधिक लोग कांगड़ी बोलते है। अधिकांश भाषाओं बोलियों की तरह कांगड़ी भी अपनी पड़ोसी बोलियों के साथ एक बोली सातत्य बनाती है। कांगड़ी बोली की लिपि टांकरी लिपि है। "कांगड़ी भाषा हिमाचल प्रदेश की संस्कृति का आधार है और इसके संरक्षण के लिए हमें प्रयास करने होंगे।"

कांगड़ी भाषा या बोली के विलुप्त होने के कारण -कोई भी बोली जब विलुप्त हो रही होती है तो उसके कई कारण होते है जिस भाषा का व्याकरण नहीं होता उसे भाषा के रूप में स्वीकार किया ही नहीं जा सकता। आज तक कागड़ी को भाषा का स्थान दिलाने की मात्र कोरी कल्पना ही बनकर रह गई है। संस्कृति की यह विशेषता है कि यह निरंतर, बिना रुके, अविरल धारा की तरह प्रवाहित होती रहती है। भाषा या बोली संस्कृति का एक मुख्य तत्त्व होता है। प्रदेश में कविताएं, ग़ज़लें, कहानियां तथा बहुत सा साहित्य पहाड़ी भाषा में छप रहा है। बहुत से लेखक पहाड़ी लेखन में प्रयासरत हैं। पहाड़ी कवियों और लेखकों ने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से पहाड़ी साहित्य का सिंचन किया है। समाचार पत्रों ने भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है। वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में कई स्थानीय बोलियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। बोलियों के बोलने, सुनने तथा समझने वाले लोग कम हो गए हैं। बहुत से कांगड़ी शब्द लुप्त हो रहे हैं। कांगड़ी बोली के विलुप्त होने के मुख्य निम्न कारण है –

1. कांगड़ी बोली नई पीढ़ी जो पढ़ी लिखी और शिक्षित वर्ग है उनसे दूर होती जा रही है। पुरानी पीढ़ी के लोग गर्व और शान से कांगड़ी जो उनकी मां बोली है उसका उच्चारण किया करते थे लेकिन ठीक उसके विपरीत नई पीढ़ी के युवा पाश्चात्य बोली या भाषाओं की और आकर्षित होते जा रहे हैं।
2. बचपन में अभिभावकों द्वारा कांगड़ी बोली का उच्चारण करने से बच्चों को रोकना और हिंदी या अंग्रेजी में बात करने पर अधिक बल देना।
3. कांगड़ी लोकगीत वर्तमान समय में विलुप्त होने की कगार पर है, इसका एक मुख्य कारण यह है कि नौजवान साथी प्रचलित गीतों को प्राथमिकता दे रहे है हिंदी फिल्मी सिनेमा के गीतों की तरफ नई पीढ़ी के

युवा उन्मुख हो रहे हैं।
4.नई पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की ओर अधिक अग्रसर हो रही है।
5.कांगडा में अगर कुल औसत की बात की जाए तो यहां गद्दी बोली अधिक बोली जाती है। वर्तमान में जो कांगड़ी या बोली के अंतर्गत आती है लेकिन वर्तमान समय के पीढ़ी के युवा सार्वजनिक स्थानों से गद्दी बोली जो उनकी मां बोली है उसका उच्चारण करने से शर्म व झिझक महसूस करते है। गद्दी या कांगड़ी बोली के पीछे विलुप्त होने का भी मुख्य कारण है।
6. कांगड़ी को साहित्य के क्षेत्र में भी कोई विशेष स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है। इसीलिए एक स्थान तक ही सीमित रह गई है।
7.सामाजिक और सरकारी संचार के लिए कांगड़ी का न्यूनतम प्रयोग।
8.शिक्षा के क्षेत्र में कांगड़ी बोलने को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। सरकारी स्कूलों को छोड़कर पब्लिक स्कूलों की ओर लोगों का अधिक झुकाव होना भी कांगड़ी बोली के लुप्त होने का मुख्य कारण है। कांगड़ा के कई स्कूलों में कांगड़ी बोली बोलने पर एक विशेष जुर्माना रखा गया है।
9.स्कूली पाठ एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल न होने के कारण भी बोली विलुप्त होने के कगार पर है
10.शिक्षा स्वास्थ्य जैसी मूल भूत सुविधाओं के अभाव में लोग अपने घरों से पलायन कर रहें हैं परिणामत: अपनी – अपनी भाषाओं को भी भूलते जा रहे हैं।

कांगड़ी भाषा या बोली का संरक्षण के प्रयास :

1. कांगड़ी बोली के अस्तित्व को बिखरने से रोकना है तो यह हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को हिंदी और अंग्रेजी के अलावा मातृ बोली बोलना भी सिखाएं। अभिभावकों की भी यह नैतिक जिम्मेदारी है कि अपने बच्चों में बचपन से ही पहाड़ी बोली के महत्त्व को बताएं।
2. कांगड़ी भाषा या बोली जनता के सामाजिक – सांस्कृतिक स्थिति एवम दृष्टि का विश्लेषण उनकी मातृभाषा में करना चाहिए जिससे की उसके सभी पक्षों के यथावत सुधार हो सके।
3. भाषा को संगीत, साहित्य, सिनेमा, टीवी शो आदि के माध्यम से भी बढावा दिया जा सकता है जहां इसे लंबे समय तक सफलतापूर्ण संरक्षित किया जा सकता है और इसे अगली पीढ़ी को और भी सुविधाजनक तरीके से पारित किया जा सकता है।
4. अलिखित स्तर से लिखित व रचनात्मक स्तर तक उठाने का सार्थक प्रयास किया जाना चाहिए।
5. नई शिक्षा नीति के तहत कांगड़ा के प्राथमिक स्कूलों में सप्ताह में कोई एक दिन निर्धारित होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी अपनी मातृ भाषा में बात कर सके,उसे समझने और जानने का मौका मिल सके।
6. दर भाषा के प्रभाव से विलुप्त होने की कगार पर खड़ी कांगड़ी बोली को मुख्य धारा से जोड़ने व नवीन तकनीक से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।
7. कांगड़ी भाषा जनता के सामाजिक – सांस्कृतिक स्थिति एवम दृष्टि का विशेषण उनकी मातृभाषा में करना चाहिए जिससे की उसके सभी पक्ष में यथावत सुधार हो सके।
8. बड़े पैमाने पर क्षेत्रीय मेले और समारोह होने चाहिए जहां लोक-गीतों वाद -विवादो, कहानियों आदि की मदद से अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व कर सकें।
9. बड़े सांस्कृतिक मंचों पर विभिन्न सार्वजनिक प्रचार कार्यों का प्रदर्शन करने के साथ-साथ कांगड़ी थीम बाली पार्टियों का आयोजन करके युवा पीढ़ी और बच्चों को कांगड़ी बोली सिखाई जा सकती है।
10. अधिक प्रभावित तरीके से बोली को बोलने और सफलतापूर्वक संरक्षित करने में मदद के लिए प्रसिद्ध हस्तियों से भी संपर्क किया जा सकता है।
11. वर्तमान संदर्भ में इंटरनेट का प्रचलन बहुत बढ़ गया है युवा वर्ग अपनी स्थानीय बोली में ब्लॉग सीख कर भी विश्व ग्राम की परिकल्पना को साकार कर सकता है।
12.अपने बच्चों को संस्कार का बीज अपनी स्थानीय बोली को जीवित रख कर बो सकते हैं, जिससे न केवल बच्चों में लोक संस्कृति, लोक साहित्य व इसके इतिहास में रुचि पैदा होगी, साथ ही उनका नैतिक और बौद्धिक विकास भी होगा।
13.हिमाचल प्रदेश का भाषा एवं संस्कृति विभाग व कला संस्कृति एवं भाषा आकादमी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लोक संस्कृति, साहित्य, कला व बोलियों के संरक्षण में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सारांश : अतः जब भी किसी भाषा या बोली की बात होती है तो भारतेंदु का यह कथन सार्वभौमिक रूप से सत्य को प्रमाणित करता हुआ प्रतीत होता है " निज भाषा उन्नति आहै सब उन्नति को मूल , बिन निज भाषा ज्ञान के , मिटे न हिय के सूल ।" कांगड़ी बोली के संदर्भ में भी यह सर्वविदित है कि अपनी बोली के प्रति लगाव लोगों को होना चाहिए। जिससे उनकी बोली का विकास हो सके । आधुनिकता की चकाचौंध भी उनकी मानसिकता व मूल्यों को बदल नहीं पाएगी। युवा पीढ़ी मां बोली, गांव की मीठी बोली को अपना कर अपने जीवन मूल्यों को समझे और अपनी युवा सोच से देश के नवनिर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। यदि हम आज नहीं संभले तो पहाड़ी बोली के अस्तित्व को तलाशते नजर आएंगे कि हमारे पूर्वज किस बोली में अपने मनोभाव को व्यक्त करते थे। तब शायद बोली के इस मूल रूप को समझने वाले कोई न हो, इसलिए प्रत्येक जिला की बोलियों को सहज कर रखने की नितांत आवश्यकता है। मेरा यह मानना है कि युवाशक्ति ही ऐसी शक्ति है जो समाज की धारा को बदल सकती है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हिमाचल कला,संस्कृति और भाषा अकादमी, त्रैमासिक पत्रिका सोमसी, संयुक्त (163,64): डॉ० पीयूष गुलेरी तथा डॉ वशीराम शर्मा।
2. कांगड़ी भाषा का व्याकरण : डॉ० शिवनारायण शर्मा , प्रकाशक: कांगड़ा भाषा संग्रहालय, प्रथम संस्करण 2015।
3. पहाड़ी भाषा व्याकरण : मौलू रामठाकुर,हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, क्लिफ एण्ड स्टेट शिमला , प्रकाशन वर्ष 2008।
4. हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर : डॉ० प्रत्यूष गुलेरी,प्रकाशक शब्द सेतु, प्रथम संस्करण 2005।
5. https://www.amarujala.com
6. hppts://www.divyahimachal.com
7. https://www.hmoob.in/wiki/kangri language